ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218
PP. No.- 120-123

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- IV, Issues-30, YEAR- Oct.-Dec.-2023

सूचना समाज में महिलाओं के शोषण पर आधारित एक समाजशास्त्रीय अध्ययन (हमीरपुर जनपद के संदर्भ मे)

ओम नारायण
असिस्टेंस प्रोफेसर– समाजशास्त्र विभाग, उदित नारायण पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज–पडरौना, कुशीनगर (उ0प्र0) भारत

Received-05.11.2023, Revised-11.11.2023, Accepted-16.11.2023 E-mail: omnarayan774@gmail.com

सारांश: ***परिवर्तन प्रकृति का शाश्वत नियम है जैसे जैसे हमारे समाज की प्रौद्योगिकी में परिवर्तन होता गया वैसे वैसे हमारा समाज बदलता गया। समाज को जीवित रखने के लिये समाज मे परिवर्तन बहुत जरूरी है और समाज मे होने वाला परिवर्तन का मुख्य कारण उस समाज में रहने वाले लोगों का शोषण होता है। अगर समाज मे लोगो का शोषण नही होगा तब लोगों में परिवर्तन की चेतना जागृत नही होगी तथा बिना चेतना के क्रांति या परिवर्तन असंभव होता है, इसलिये समाज को परिवर्तित करने के लिये चेतना आवश्यक होती है , समाज के परिवर्तन को आगे बढ़ाते हुये समाज वैज्ञानिक'' डेनियल बेल' ने सूचना समाज की अवधारणा दी है, सूचना समाज – एक ऐसा समाज जहाँ वस्तु के उत्पादन की जगह सूचनाओं का उत्पादन होता है अर्थात इस समाज को सूचना का पण्वीकरण कहते है। ये सूचना समाज, मार्क्स के पूंजीवादी समाज का क्रांतिकारी परिवर्तित रूप है। सूचना समाज या उत्तर औद्योगिक समाज को विलंबित पूंजीवाद कहा है '' जहाँ पर वस्तु के पण्वीकरण की जगह संस्कृति का पण्वीकरण होता है वहीं एंथनी गिडेंस'' द्वारा सूचना समाज को प्लास्टिक सेक्सुअलिटी का नाम दिया, जहाँ महिलाओ से यौन संबंध बनाने की जगह उनकी यौनता को बेचा जाता है'' सूचना समाज को उपभोग का समाज कहा गया, जहाँ उत्पादन पर ध्यान न देकर केवल वस्तु के उपभोग पर ध्यान दिया जाता है जो प्रतीकों के माध्यम से किया जाता है।***

कुंजीभूत शब्द– शाश्वत नियम, प्रौद्योगिकी, शोषण, चेतना जागृत, सूचना समाज, उत्पादन, पण्वीकरण, पूंजीवादी समाज, यौनता।

इस समाज में महिलाओं को एक वस्तु की तरह देखा जाने लगा है और इसके केन्द्र मे प्राचीन पुरूषसत्ता ही कार्य कर रही है जहां महिलाओं को प्रतीकों के रूप मे उपभोक्ता के सामने परोसा जाता है तथा उसके प्रभाव से विभिन्न प्रकार के अपराधो को महिलाओ द्वारा झेला जाता है। सूचना समाज एक ऐसा समाज है जिसकों कुछ समाजशास्त्री विलंबित पूंजीवाद कहते है तो कुछ समाजशास्त्री पूजींवाद की अधूरी परियोजना कहते है, वहीं कुछ समाजशास्त्रियों का अनुमान है कि उत्तर औद्योगिक समाज महान वृत्तातों का विश्लेषण करने वाला समाज है , वही कुछ समाजशास्त्री सूचना समाज को विलंबित आधुनिकतावाद भी कहा है। अर्थात सूचना समाज एक तरफ तो पुरूषसत्ता को आगे बढाने पर जोर दे रहा है, वहीं दूसरी तरफ पुरूषसत्ता को विश्लेषित करके नये सिरे से नव निर्माण करना चाहता है लेकिन इन दोनों विचारधाराओं के बीच नारी को कुचला जा रहा है, जो कि ये नारी अब दोनो तरह की विचारध ाारा को झेल रही है। महिलाओं को सशक्तीकरण की रूप रेखा तो तैयार कर दी गयी है, लेकिन अभी तक ये सशक्तीकरण पुरूषवादी सत्ता के बीच खडा रह गया है अतः अभी नवनिर्मित सूचना समाज मे भी महिलाओ का शोषण जारी है।

साहित्य पुनरावलोकन– एफ जेमेसन (post modernism'' 1991) के अध्ययन में पाया कि उत्तर आधुनिकता मे सास्कृतिक बहुलता का कारण पूंजीवाद है यह पूंजीवाद ही है जो संस्कृति के नाम पर मुनाफाखोरी कर रहा है यह पूंजीवाद की साजिश है जो हाशिये के लोगो को सस्ती सास्कृतिक भागीदारी करवाकर उन्हें ठग रहा है।

ज्यां बार्डीलार्ड (''सिम्युलेशन ''1983) के अध्ययन मे पाया कि प्रतिकृति या कार्बन कापी उन वस्तुओं की कापियां है जिनकी मूल कापी नही है अर्थात इस अध्ययन के माध्यम से मीडिया और जनता के उत्तर आधुनिक समाज के संबंधो को समझाया है।
मिशेल फूको (''हिस्ट्री आफ सेक्सुअलिटी'' अवस.1 1976) के अध्ययन मे शक्ति, ग्यान और भोग विलास के संबंधो का अध्ययन किया किस तरह वर्जित कामुकता पर खुल कर चर्चाये होने लगी और भोग विलास की चर्चा सामान्य हो गयी।
एंथनी गिडेन्स (the transformation of intimacy : sexuality, love and eroticism in modern societies'' 1993) के अध्ययन मे पाया कि व्यक्ति अपने आप को शारीरिक और व्यक्तित्व स्तर पर ऐसा विकसित करना चाहता है कि उसकी अलग पहचान बन सके शरीर का रखरखाव, भरा पूरा चेहरा, लंबे घने बाल, स्लिम शरीर ये सब प्लास्टिक कामुकता के अंग है।

Amit sarikwal (''महिला पुलिस : अधिकार एवं कर्तव्य'' 2009 पेज नं 15, 21, 25) ने अपने अध्ययन मे पाया कि लोगों का मानना है कि पुलिस विभाग मे अश्लीलता अधिक है और महिलायें पुलिस विभाग मे जाती है तब वे भी अश्लीलता व्यवहार सीख जायेगी ऐसी महिलायें परिवार को संरचित तथा समायोजित नहीं कर सकती है तथा महिला पुलिस एक साथ दो भूमिकाओं को निभाकर या पुलिस के अनियमित कार्य के बीच घर परिवार को कैसे सुरक्षित रख सकती है।

जे पी सिंह (" social change in modern india " अवस.2, 2009) ने अपने अध्ययन मे पाया कि जहाँ पीढियाँ माताओ के संस्कार के पाती थी आज वे दिग्भ्रमित है आज शिक्षा और समाज ने लडकियो को घर से बाहर नौकरी के लिये घर से बाहर भेज दिया है तथा परिवार धीरे–धीरे ध्वस्त होते जा रहे है। बच्चों को जहाँ संस्कार माताओ या परिवारों से मिलना चाहिये। वह अब पब्लिक स्कूल मे प्राप्त हो रहा है या बच्चों को घर पर परिचारिकाओं से प्राप्त हो रहा है।

''महिलाओ का कार्यस्थल पर लैंगिक उत्पीडन (निषेध, निवारण अधिनियम, 2013)'' के आधार पर पाया गया है कि महिलाये अभी भी सुरक्षित नही है। महिलाये घर की चारदीवारी से बाहर तो निकली है लेकिन अभी भी वे असुरक्षित है जिसके परिणामस्वरूप ## ME TOO ## साइबर आन्दोलन 2018 मे प्रकाश मे आया, जिसके माध्यम से महिलाओ को न्याय दिलाने का प्रयास किया जा रहा है।

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- IV, Issues-30, YEAR- Oct.-Dec.-2023

डॉ0 प्रीति परमार "आधुनिकीकरण पर जनसंचार के माध्यमों का प्रभाव 2019 "(एक समाजशास्त्रीय अध्ययन)" इस रिसर्च पेपर के अध्ययन के आधार पर सूचना क्रांति ने संपूर्ण विश्व में साम्राज्यवाद की बहस छेड़ रखी है क्योंकि इसके सूत्र मुख्य रूप से विकसित देशों के हाथ में है। अतः आशंका की जा रही है कि औद्योगिक क्रांति की तरह पिछड़ें देशों को विशिष्ट प्रकार के नव उपनिवेशवाद में न बना दिया जाये। यह उपभोक्ता वादी समाज के विकास के रूप में होगा।

सुनीता शुक्ला "महिलाओं के आर्थिक जीवन पर आधुनिकी करण का प्रभाव (रीवा नगर के विशेष संदर्भ मे) 2019 " के अध्ययन के आधार पर आधुनिकता के कारण मनुष्य प्रतियोगिता की अंधी दौड़ से आगे बढ रहा है। जहां व्यक्तिगत संबंध और रिश्ते पिछड़ रहे है लेकिन इस अंधी दौड़ और समाज के बीच संतुलन बनाये रखना आवश्यक भी है आधुनिकी करण उपभोक्ता वादी संस्कृति का जन्मदाता है उपभोक्तावाद ने हम के स्थान पर मैं को बढावा दिया है। सामाजिक संबंधों में दृढ़ता को स्थान दिया है।

श्रीमती विनीता तायल "सूचना प्रद्यौगिकी मे महिलाओं की भूमिका (एक समाजशास्त्रीय अध्ययन) 2009" अध्ययन के आधार पर सूचना प्रौद्योगिकी प्राथमिक और प्रमुख रूप से महिलाओं की पारिवारिक, सामाजिक, व्यक्तिगत और राजनीतिक भूमिकाओं को निरंतर प्रभावित कर रहा है। महिलाओं की भूमिकाये और प्रस्थिति ही उसे उत्पादन के संबंधों से जोडती है।

अध्ययन की आवश्यकता– वर्तमान डिजिटल समाज में समय और स्थान का दूरीकरण तथा संकुचन होने से स्थानीय सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आर्थिकी का सार्वभौमीकरण होने से इनका वस्तुकरण हो गया है, जिसके प्रभाव से सामाजिक मूल्यों का ह्रास होने लगा है और लैंगिक असमानता की स्थिति पुनः उत्पन्न हो गयी है। सामाजिक संबंधो में परिवर्तन होने से सामाजिक विघटन की स्थिति उत्पन्न हो गयी है।

अतः इस सूचना समाज को पुनर्गठित करने के लिये, लैंगिक असमानता को समाप्त करने के लिये तथा सामाजिक संबंधो के वस्तुकरण को व्यक्तिकरण में बदलने के लिये वर्तमान सूचना समाज की समस्याओं को समझने के लिये सामाजिक अनुसंधान की अत्यन्त आवश्यकता है। तभी इस विघटित समाज को दोबारा पुनर्गठित किया जा सकता है।

1– घरेलू हिंसा अधिनियम 2005, कार्यस्थल पर लैंगिक उत्पीडन अधिनियम 2013, बेटी बचाओं बेटी पढाओ योजना के बावजूद भी महिलाओ का शोषण होने के कारण इस अध्ययन की आवश्यकता महसूस हुयी।

2– घर में सम्मान पाने, घरेलू हिंसा से बचने के लिये, एवं परिजनों के अपमान से बचने के लिये जब एक महिला आत्मनिर्भर होने के लिये घर से बाहर निकलती है तब उसे समाज और पुरूषसत्तात्मक सोच रखने वालो से सामना करना पडता है, अनेक लोगो की टीका टिप्पड़ी तथा घूरती निगाहों का सामना करना पड़ता है। ऐसी स्थिति में महिला अपने आप को शोषित महसूस करती है।

3– भारत में महिलाओं के प्रति बढती यौन हिंसा, मानव तस्करी और यौन व्यापार में ढकेले जाने के आधार पर भारत को महिलाओं के लिये खतरनाक बताया है। सांस्कृतिक व धार्मिक परंपराओं के कारण महिलाओं का शोषण तथा महिलाओं को सेक्स धंधों मे धकेलना, घरेलू गुलामी, जबरदस्ती विवाह तथा भ्रूण हत्या ही भारत में महिलाओ के शोषण का कारण है।

4– महिलाओं के आर्थिक सशक्तीकरण हेतु निवेश करने से लैंगिक समानता, गरीबी उन्मूलन और समावेशी विकास आर्थिक वृद्धि का मार्ग प्रशस्त करता है लेकिन अर्थव्यवस्था में महिलाओं और बालिकाओं को समाहित करने और कार्य स्थलो और सार्वजनिक स्थानों को सुरक्षित बनाने के साथ साथ महिलाओ और बालिकाओं के साथ होने वाली हिंसा को रोकने की जरूरत है।

सूचना समाज मे पुरुष प्रभुत्व के कारण और प्रभाव– समाज में लैंगिक असमानता का प्रमुख कारण समाजीकरण होता है समाज में जन्मा बच्चें का जिस प्रकार समाजीकरण होगा उसी तरीकें की उसकी जीवन शैली, जीवन अवसर तथा संस्कृति होगी। इसी प्रकार सूचना समाज में जो पुरूष प्रभुत्व द्वारा महिलाओं को मीडिया में प्रचार के माध्यम से उनका वस्तुकरण किया जाता है उसका मुख्य कारण उस परिवार में बच्चे का किया गया समाजीकरण तथा समाज की आवश्यकता है, क्योकि डिजिटलीकरण ने बाजारीकरण और सार्वभौमीकरण को बढावा दिया है और इसी बाजारीकरण ने उत्पादन की जगह को प्रभावित किया जिसने महिलाओं को केन्द्र में रखकर उन्हे लोगो की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये उपभोग की वस्तु बना दिया गया है। समाज में जो लैंगिक असमानता व्याप्त है, उसकी पूर्ति महिलाओं को मीडिया के माध्यम से उनके शरीर, यौन, स्तन को दिखाकर किया जाता है जो कि अब प्रत्येक व्यक्ति की हैबिटस में उतर गया है। इसलिये जब तक हम संस्कृति, समाजीकरण तथा हैबिटस को नहीं बदलते तब तक समाज में लैंगिक असमानता के साथ महिलाओं के शरीर का बाजारीकरण होता रहेगा।

उद्देश्य– सूचना समाज में महिलाओं का तकनीकी द्वारा शोषण का अध्ययन करना, सूचना समाज में महिलाओं के शोषण के बदलते स्वरूप का अध्ययन करना,

परिकल्पना–

1. उत्तर औद्योगिक समाज में सूचना प्रौद्योगिकी ही महिलाओं के शोषण में प्रमुख भागीदार है।
2. सूचना प्रौद्योगिकी के द्वारा महिलाओं पर अभी भी पुरूष सत्ता कायम है।

सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य–

1. उत्तर आधुनिकवादी नारीवाद– उत्तर आधुनिक नारीवाद का लक्ष्य समाज में स्थापित पितृसत्तात्मक मानदंडों को अस्थिर करना है, जिसके कारण लैंगिक असमानता हुई है। उत्तर–आधुनिक नारीवादी महिलाओं के बीच मौजूद मतभेदों को स्वीकार करने के पक्ष में अनिवार्यता, दर्शन और सार्वभौमिक सत्य को खारिज करके इस लक्ष्य को पूरा करना चाहते हैं कि सभी महिलाएं समान नहीं हैं।

1. इन विचारधाराओं को उत्तर आधुनिक नारीवादियों द्वारा खारिज कर दिया गया है, क्योंकि उनका मानना है कि यदि एक सार्वभौमिक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- IV, Issues-30, YEAR- Oct.-Dec.-2023

सत्य समाज की सभी महिलाओं पर लागू होता है, तो यह व्यक्तिगत अनुभव को कम करता है, इसलिए वे महिलाओं को समाज में आदर्श के रूप में प्रदर्शित विचारों के बारे में जागरूक होने की चेतावनी देते हैं, क्योंकि यह पुरुषों की मर्दाना धारणाओं से उत्पन्न हो सकता है। महिलाओं को कैसे चित्रित किया जाना चाहिए।

शोध प्ररचना–

1. अन्वेषणात्मक शोध तथा व्याख्यात्मक शोध कार्य प्रणाली के आधार पर शोध पद्धतियों का उपयोग किया गया है।
2. संभावित निदर्शन में से बहुस्तरीय निदर्शन के आधार पर शोध समग्र का चयन किया है, जिसमे से हमीरपुर जनपद की हमीरपुर तहसील के कुरारा ब्लाक के एक ग्राम पंचायत (चार गांवों का समूह) समग्र में से दैव निदर्शन सैंपलिग के आधार पर 100 परिवारों का सूचना प्रौद्योगिकी से शोषित महिलाओं का अध्ययन किया गया है।
3. प्राथमिक और द्वितीयक सामग्री की सहायता से संबंधित समस्या के तथ्यों को एकत्रित किया गया।
4. शोध पद्धतियों मे प्रश्नावली तथा अनुसूची, सर्वेक्षण का भी प्रयोग किया गया।
5. गुणात्मक और परिणात्मक पद्धतियों का प्रयोग किया गया।

तथ्यों का एकत्रीकरण– उत्तर प्रदेश के हमीरपुर जनपद की हमीरपुर तहसील के कुरारा ब्लाक के एक ग्राम पंचायत (चार गांवों का समूह) जिसमें से समग्र के 100 परिवारों से तथ्यों का एकत्रीकरण किया गया। परिवारों के समग्र में से बहुस्तरीय सैंपलिग तथा दैव निदर्शन के आधार पर समस्या से संबंधित शिक्षित तथा अशिक्षित परिवारों का अन्वेषणात्मक और अंतरवस्तु विश्लेषण के आध ाार पर समस्या से संबंधित डाटा एकत्रित किया गया।

गावों मे सोशल मीडिया, जनसंचार मीडिया, से प्रभावित महिलाओं का अध्ययन किया गया जिनकी जीवन शैली मे बदलाव तो आया है, लेकिन उन महिलाओं का अभी भी पुरूष प्रभुत्व के प्रभाव से सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक क्षेत्र में शोषण होता है। सूचना समाज से शोषित महिलाओं की समस्या का गहन अध्ययन के लिये वैयक्तिक अध्ययन का भी प्रयोग किया गया। संबंधित समस्या के पुराने न्यूज पेपर तथा जनसंचार मीडिया तथा ''राष्ट्रीय महिला आयोग'' वेबसाइट से मौजूदा समस्या से संबंधित डाटा के आधार पर समस्या के तथ्यों को एकत्र किया गया तथा अवलोकन तथा सर्वे पद्धति के माध्यम से शोषित महिलाओं की मानसिक शोषण प्रवृति को समझने का प्रयास किया गया।

विश्लेषण– शोधकर्ता द्वारा प्रयुक्त अध्ययन पद्धतियों द्वारा तथ्यों का एकत्रीकरण करने के बाद व्यवस्थित विश्लेषण किया गया जिसमें प्रयुक्त समग्र में से 70 प्रतिशत महिलाओं ने माना कि इस सूचना समाज में महिलाओं को घर की चारदिवारी से आजादी तो जरूर मिल चुकी है लेकिन घर से बाहर निकलने पर आज भी लोग महिलाओं को एक वस्तु के रूप में देखकर उनको असहज महसूस कराते है, वहीं 25 प्रतिशत महिलाओं का मानना है कि सूचना समाज में महिलाओं को आजादी तो प्राप्त हुयी है, लेकिन ये आजादी पुरूष प्रभुत्व समाज के बिल्कुल खिलाफ है जिसके प्रभाव से महिलाओं द्वारा अपना काम काज खतम करके घर वापस आने पर उनको पहले जैसा शोषण किया जाता है, और 5 प्रतिशत महिलाओं का मानना है कि आज का समाज, परंपरागत समाज से बिल्कुल भिन्न है इसलिये महिलाओं को आजादी के साथ उनको पुरूषों के बराबर राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक क्षेत्र में भी समानता प्राप्त होनी चाहिये, तभी आज का समाज व्यवस्थित होकर आने वाला भविष्य का समाज सुसंठित और व्यवस्थित होगा।

वहीं दूसरी ओर प्रयुक्त तथ्यों के विश्लेषण के परिणामस्वरूप संपूर्ण समग्र में से 75 प्रतिशत महिलाओं का मानना है कि सूचना प्रौद्योगिकी ही महिलाओं के वर्तमान शोषण का आधार है, वहीं 25 प्रतिशत महिलाओं का मानना है सूचना प्रौद्योगिकी से महिलाओं में आत्मनिर्भरता पनपी है, जिसके परिणामस्वरूप वे सशक्त भी हुयी है, लेकिन यही सशक्तिकरण पुरुषों द्वारा महिलाओं के शोषण का आधार बना है, क्योंकि यही सूचना प्रौद्योगिकी ही महिलाओं को एक वस्तु का स्वरूप प्रदान करती है। फिल्म उद्योग में, प्रचार में, या कोई ऑनलाइन व्यवसाय में महिलाओं के एक वस्तु के रूप मे केन्द्रित करके समाज के सामने परोसा जाता है, जिसके कारण महिलाओं का सामाजिक अस्तित्व समाप्त हो जाता है और पुरुषों द्वारा शोषण प्रारंभ हो जाता है। वही 5 प्रतिशत महिला सूचनादाताओ का मानना है कि सूचना प्रौद्योगिकी से वर्तमान की महिलाओं में अपने अधिकारों के प्रति जागरूकता और आत्मनिर्भरता पनपी है, जिसका प्रभाव भविष्य की आने वाली पीढियों में पुरुषों के शोषण के खिलाफ लडने में सहायता मिलेगी।

निष्कर्ष– सूचना प्रौद्योगिकी के प्रभाव से महिलाओं में आर्थिक, सामाजिक राजनैतिक तथा व्यावसायिक आकांक्षायें बहुत प्रबल हो गयी है। वह आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर तो होना चाहती है साथ ही साथ राजनीतिक, सांस्कृतिक और वैतारिकी में भी आत्मनिर्भर होना चाहती है।

जिसके प्रभाव से वह अपने आप को पुरुषों के समान सामाजिक अधिकार प्राप्त कर सके, इससे उसमें आत्मविश्वास बढ़ेगा और वह प्रगति भी कर सकेगी एवं समाज में व्याप्त लैंगिक असमानता, सामाजिक असमानता को दूर कर सकेगी। महिलाओं के लिये आत्म अभिव्यक्ति और आत्म सन्तुष्ट के अवसर बहुत सीमित रखे गये हैं, जिसके कारण महिलाओं की आवाज को पुरूष प्रधान समाज में दबा दिया जाता है, वहीं मशीनीयुग तथा सूचना प्रौद्योगिकी ने घर से बाहर ही वस्तु उत्पादन इतना अधिक बढ़ा दिया है कि आर्थिक आवश्यकता के चलते महिलायें काम–काज के लिये अब घर से बाहर निकलने लगी हैं तथा कंप्यूटर, टीवी, फिल्म, मोबाइल के प्रभाव ने महिलाओं के लिये आत्मनिर्भरता के अवसर ने दिये है, लेकिन यही अवसर कहीं न कहीं महिलाओं को शोषित करने की दिशा भी प्रदान किया है, चाहे कोई फिल्म हो या टीवी प्रचार, ये सब अपने मुनाफे के लिये महिलाओं की सुन्दरता की सौदेबाजी करके पुरुष प्रधान सूचना समाज में पूंजीवादी शासन के प्रभुत्व को बढाने का प्रयास कर रहे हैं।

उपरोक्त अध्ययन के उपरान्त निष्कर्ष रूप में हम कह सकते है कि सूचना प्रौद्योगिकी के फलस्वरूप, शिक्षा और आत्मनिर्भरता

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- IV, Issues-30, YEAR- Oct.-Dec.-2023

के प्रति महिलाओं में जागरूकता बढ़ी है, लेकिन यह जागरूकता तो केवल शोषण को ही दर्शाती है 95 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इस बात को सत्यापित भी किया है।

अध्ययन में यह भी स्पष्ट हुआ है कि जैसे जैसे समाज में परिवर्तन होता है वैसे–वैसे महिलाओं के शोषण के तरीकों में भी परिवर्तन होता है, प्राचीन समाज में महिलाओं का शोषण घर की चारदिवारी के अंदर (घूंघट में रहना, बाल विवाह, सती प्रथा) होता था। वहीं आधुनिक समाज में महिलाओं का शोषण घर की चारदिवारी के बाहर(औद्योगिक क्षेत्र में, कार्यालय में, बाजार में कम मजदूरी और सामाजिक सम्मान) होता है और सूचना समाज में तो महिला घर में हो या बाहर (फिल्म में, टीवी में, प्रचार में महिलाओं की सुन्दरता को बेचकर) उसका शोषण कहीं भी किसी भी तरीके से हो सकता है।

समाज के परिवर्तित स्वरूप से समाज तथा लोगों की आवश्यकताओं मे भी परिवर्तन आ जाता है और जब तक इनकी आवश्यकताओं की पूर्ति नही हो जाती, तब तक समाज द्वारा व्यक्ति का शोषण होता रहेगा।

तब हमें व्यक्ति और समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये समाज के बदलते स्वरूप के आधार पर नयी संस्थाओं का विकास करना चाहिये, जो व्यक्ति को नियंत्रित करके उनमे सामाजिक मूल्यों का समावेश भी करेगी जिससे व्यक्तियों मे नैतिकता की भावना पनपेगी और फिर समाज की व्यवस्था का पुनर्गठन होने लगेगा।

जब तक समाज में पुरूष प्रभुत्व रहेगा तब तक समाज मे लैंगिक असमानता व्याप्त रहेगी और महिलाओं का शोषण होता रहेगा अतः महिलाओं को शोषण से मुक्त करने के लिये समाज तथा व्यक्ति की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये नयी संस्थाओ का विकास आवश्यक है और यही संस्थायें ही समाज को पुनर्गठित कर सकेगी।

सामाजिक विचारक ''एंथनी गिडेंस''– न ही केवल व्यक्ति समाज को बनाता है और न ही केवल समाजिक नियम समाज को बनाते है, बल्कि समाज की व्यवस्था तो व्यक्ति और समाज दोनो के समन्वय से मिलकर बनती है।

अतः जैसे समाज मे परिवर्तन होगा उसी तरह संस्थाओ का नव निर्माण होता रहेगा तब उन संस्थाओ के प्रभाव से व्यक्ति की आवश्यकताओं मे भी परिवर्तन आ जायेगा और इसप्रकार से समाज का परिवर्तित स्वरूप पुनः व्यवस्थित हो जायेगा।

सुझाव–

1. सूचना समाज में महिलाओं को एक वस्तु के रूप में देखा जाता है जिसके प्रभाव से महिलाओं के संवेगो और मनोभावों का विनाश हो रहा है, जिसके परिणामस्वरूप विवाह तथा परिवार रूपी संस्थाओं का विघटन हो रहा है, तो समाज की इन संस्थाओ को बचाने के लिये संबंधो के वस्तुकरण को समाप्त करके पुनः सामाजिक मूल्यो, संवेगों को वापस लाना होगा।
2. परिवार, विवाह, तथा समाज को बचाने के लिये महिलाओं को एक वस्तु के रूप में नही, बल्कि एक मानव के रूप में देखना चाहिये जिससे सामाजिक संबंधों का निर्माण हो सके और परिवार तथा विवाह रूपी संस्था को बचाया जा सके।
3. समाज में लैंगिक समानता लाने के लिये सामाजिक संबंधों के वस्तुकरण को समाप्त करना होगा तथा सामाजिक मूल्यो के आधार पर महिला और पुरूष की प्रस्थिति और भूमिकाओं का निर्धारण करना होगा, तभी समाज में महिलाओं की स्थिति को सुधारा जा सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. Jameson, Frederic (1991) : "Post modernism or cultural logic of late capitalism" , duke university press, United state .
2. Baudrillard, jean (1981) : "simulation ,semiotext " english .
3. Foucault, Michel (1976) : "history of sexuality vol.1. Editions gallimard" .
4. Giddensce , Anthony (1992) : "the transformation of intimacy" , Stanford university press .
5. Singh, j p (2019) : "social change in modern India (india in 21 century) 2 edition" , phi learning private limited .
6. (2013): ##MEE TOO## , ''महिलाओं पर कार्यस्थल पर लैंगिक उत्पीडन अधिनियम (निषेध, निवारण, प्रतिषेध अधिनियम)''।
7. परमार, डा प्रीति (2019) : ''आधुनिकीकरण पर जनसंचार के माध्यमों का प्रभाव एक समाजशास्त्रीय अध्ययन'' , IJRRSS।
8. शुक्ला, सुनीता (2019) : '' महिलाओ के आर्थिक जीवन पर आधुनिकी करण का प्रभाव (रीवा नगर के विशेष संदर्भ मे)'', IJRRSS.
9. तायल, श्रीमती विनीता (2009) : ''सूचना प्रौद्योगिकी मे महिलाओ की भूमिका'' , पं जवाहर लाल नेहरू पीजी कालेज बांदा।
10. सरीकवाल, अमित (2009) : ''महिला , पुलिस : अधिकार एवं कर्तव्य '' , ग्लोरियर्स पब्लिशर्स नयी दिल्ली

*****